भारत सरकार

रेल मंत्रालय

लोक सभा

17.12.2025 के

अतारांकित प्रश्न सं. 2901 का उत्तर

उत्तर प्रदेश में रेल संपर्क की कमी

2901. श्री छोटेलाल:

श्री नारायणदास अहिरवार:

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि सोनभद्र में स्वतंत्रता के बाद से चकिया से भभुआ, मोहनिया होते हुए नौगढ़, सोनभद्र तक कोई रेल सेवा उपलब्ध नहीं है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार का उक्त जिले में रेल सेवा आरंभ करने का विचार है;

(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है तथा उक्त स्थानों पर रेल सेवा कब तक चालू होने की संभावना है;

(घ) क्या बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित जालौन, गरौठा, भोगनीपुर, हमीरपुर और कानपुर देहात जिलों के लोक सभा निर्वाचन क्षेत्रों से दिल्ली के लिए कोई सीधी रेल सेवा नहीं है जिससे स्थानीय निवासियों, छात्रों, व्यापारियों और श्रमिकों के समय और धन की बर्बादी होती है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ङ) क्या सरकार इस क्षेत्र के लोगों की लंबे समय से चली आ रही मांग को ध्यान में रखते हुए ओराई से दिल्ली के लिए सीधी रेल सेवा शुरू करने का विचार कर रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(च) क्या सरकार का जालौन जिले के मुख्यालय ओराई से नई दिल्ली के लिए श्रमशक्ति एक्सप्रेस, छपरा एक्सप्रेस और गतिमान एक्सप्रेस जैसी ट्रेनें चलाने का विचार है और यदि हाँ, तो इसका ब्यौरा क्या है और इस बारे में सरकार की क्या योजनाएँ हैं और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

रेल, सूचना और प्रसारण एवं इलेक्ट्रोनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री

(श्री अश्विनी वैष्णव)

(क) से (च): सोनभद्र और भभुआ रोड (मोहनिया) मौजूदा रेल नेटवर्क पर पंडित दीन दयाल उपाध्याय और चुनार से पहले से ही जुड़े हुए हैं।

नौगढ़ के रास्ते पंडित दीन दयाल उपाध्याय-भभुआ नई लाइन (57 कि.मी.) के लिए व्यवहार्यता का अध्ययन किया गया था। कम यातायात अनुमान के कारण इस परियोजना को आगे नहीं बढ़ाया जा सका।

किसी भी रेल परियोजना की स्वीकृति कई मानदंडों/कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- प्रत्याशित यातायात अनुमान और प्रस्तावित मार्ग की लाभप्रदता
- परियोजना द्वारा उपलब्ध कराई जाने वाली अंतिम छोर तक संपर्कता

- मिसिंग लिंकों का संयोजन और वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध कराना
- संकुलित/संतृप्त लाइनों का संवर्द्धन
- राज्य सरकारों/केन्द्रीय मंत्रालयों, अन्य जन प्रतिनिधियों द्वारा की गई मांगें
- रेलवे की अपनी परिचालनिक आवश्यकताएं
- सामाजिक-आर्थिक महत्व
- निधियों की समग्र उपलब्धता

उरई स्टेशन, जो जालौन की आवश्यकता को पूरा करता है, 80 गाड़ी सेवाओं द्वारा सेवित है। वर्तमान में, उरई स्टेशन से कानपुर और वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी स्टेशनों के लिए 38-38 जोड़ी गाड़ियों द्वारा संपर्कता प्रदान की जाती है।

इसके अलावा, कानपुर (जो हमीरपुर और कानपुर देहात की आवश्यकताओं को भी पूरा करता है) और वीरांगना लक्ष्मीबाई झाँसी वर्तमान में दिल्ली क्षेत्र से क्रमशः 98 जोड़ी और 78 जोड़ी गाड़ी सेवाओं द्वारा अच्छी तरह से जुड़े हैं।

इसी तरह, गरौठा को हरपालपुर रेलवे स्टेशन 22 गाड़ी सेवाओं से सेवित किया जाता है, जिसमें दिल्ली के लिए संपर्कता प्रदान करने वाली 2 जोड़ी रेलगाड़ियां भी शामिल हैं। भोंगीपुर को पुखरायाँ स्टेशन द्वारा 42 रेलगाड़ियों से सेवित किया जाता है।

चूँकि रेल नेटवर्क राज्य/जिला की सीमाओं के पार फैला होता है, इसलिए नेटवर्क की आवश्यकता के अनुसार, ऐसी सीमाओं के आर-पार रेलगाड़ियों को शुरू किया जाता है। बहरहाल, नई गाड़ी सेवाएँ शुरू करना निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो निम्नलिखित कारकों पर निर्भर करता है:

- उस खंड की क्षमता,
- पथ की उपलब्धता,

- **अपेक्षित चल स्टॉक की उपलब्धता,**
- **चल स्टॉक के लिए उपयुक्त अवसंरचना की उपलब्धता,**
- **रेलपथ और अन्य परिसंपत्तियों की अनुरक्षण आवश्यकता**

*****